IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माहवारी के दौरान पारिवारिक सदस्य की भूमिका का समाजशास्त्रीय अध्ययन

शोध–पत्र

छाया कुमारी (शोधार्थी)[1], डॉ. आरती कुमारी (असिस्टेंट प्रोफेसर)[2], समाजशास्त्र विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, (जयपुर)

सार

भारतीय समाज पितृसत्तात्मक समाज है तथा इस समाज में पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण से महिलाओं व लड़कियों की समस्याओं का मापन किया जाता है जो एक चिंताजनक स्थिति है। पितृसत्तात्मक समाज द्वारा निर्मित संस्कृति के अंतर्गत महिलाएं व लड़कियों खामोशी से इस प्रकार के अतार्किक मान्यताओं का सामना कर रही है। हालांकि, पितृसत्तात्मक समाज में चुनौतियां जटिल हैं। वर्तमान अध्ययन में मासिक धर्म के दौरान 10–19 वर्ष की 60 लड़कियों के मध्य पारिवारिक सहयोग की व्यापकता का पता लगाने का प्रयास किया गया है। इसके अतिरिक्त यह पता लगाने की कोशिश की गई कि क्या माहवारी के दौरान स्वच्छता विधि का प्रयोग करती हैं ? आज भी आधुनिकीकरण एवम वैश्विकरण युग में महिलाएं व लड़कियां माहवारी के विषय विशेष पर चुपचाप समाज द्वारा आरोपित प्रतिबंधों को सहन कर रही हैं। आधुनिकीकरण व वैष्वीकरण के दौर में भी समाज में कई प्रकार के सामाजिक मान्यताएँ व टैबू मौजूद है, जो लड़कियों व महिलाओं के स्वास्थ्य हित में अनुचित है। इस शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य लड़कियों के माहवारी के दौरान पारिवारिक सदस्य के भूमिका का अध्ययन करना है। इस शोध पत्र के हेतु गैर प्रतिचयन के अंतर्गत स्नोबॉल प्रतिचयन का प्रयोग किया गया है तथा गुणानात्मक एवं वर्नणात्मक अध्ययन को शामिल किया गया है एवं साक्षात्कार अनुसूची द्वारा तथ्य एकत्र किया गया है।

मुख्य बिंदु : पारिवारिक सहयोग, पितृसत्तात्मक समाज, माहवारी स्वच्छता विधि

परिचय

पुरुष और महिलाओं के शरीर के बीच जैविक अंतर स्वाभाविक हैं। हालांकि, पितृसत्तात्मक समाज द्वारा महिलाओं की अधीनस्थ सामाजिक स्थिति को बनाए रखने के लिए इन मतभेदों का बहुत चतुराई से उपयोग किया जाता है। महिलाओं व लड़कियों ने अपने स्वास्थ्य, शिक्षा, व्यवसाय और विवाह से जुड़ी मान्यताओं और प्रथाओं को इस हद तक आत्मसात कर लिया है कि उन्होंने स्वय अपनी स्थिति को कमजोर स्वीकार कर लिया है। इसके अलावा, महिलाओं व लड़कियों के लिए पितृसत्तात्मक समाज द्वारा निर्धारित और प्रचारित सोचने, व्यवहार करने, महसूस करने और व्यक्त करने के तरीकों ने महिलाओं व लड़कियों को यह स्वीकार करने के लिए मजबूर कर दिया है कि उन्हें अपने स्वयं के कल्याण के लिए संरक्षित और प्रतिबंधित करने की आवश्यकता है। यहां यह उल्लेख करना महत्वपूर्ण है कि विचार, विश्वास और प्रथाएं जो भय उत्त्पन्न करती हैं, महिलाओं व लड़कियों पर प्रतिबंध लगाती हैं और निषेध करती हैं, वे सामाजिक रूप से निर्मित होते है। महिलाएं व लड़कियां उन सभी परंपराओं और मानदंडों का पालन करना जारी रखती हैं जो उन्हें लैंगिक असमानता को बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित करता है।

पितृसत्तात्मक समाज ने इस प्रकार से लड़कियों व महिलाओं को अपने बनाई गई मान्यताएँ से जकर लिया है कि महिला व लड़कियों स्वयं का अस्तित्व को उपेक्षित करती है । पुरुष प्रधान समाज महिलाओं और उससे संबंधित मुद्दों को अपने अधीन करके पितृसत्तात्मक विचार की उच्च स्थिति बनाए रखता है। हालांकि विडंबना है कि महिलाएं व लड़कियों विभिन्न मिथकों और हठधर्मिता को सहजतापूर्वक स्वीकार करती है, चूंकि पितृसत्तात्मक समाज ने कभी भी महिलाओं एवम लड़कियों के मामलों को उचित महत्व नहीं दिया है, जिसके परिणाम स्वरूप महिलाओं के स्वास्थ्य से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों की उपेक्षा की गई है। इस संदर्भ में, गेर्डा लर्नर ने अपनी पुस्तक "द क्रिएशन ऑफ पैट्रिआर्की " में कहा है कि अधीनता में महिलाओं व किशोरियों द्वारा सुरक्षा और विशेषाधिकार के बदले अधीनस्थ स्थिति की स्वैच्छिक स्वीकृति की संभावना शामिल है। इसलिए, यह कहा जा सकता है कि पितृसत्ता अभिप्रायपूर्वक पुरुष वर्चस्व को बनाए रखने के लिए कुछ रीति–रिवाजों का संचालन करती है। वर्तमान अध्ययन में लड़कियों के स्वास्थ्य से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक को लेने का प्रयास किया गया है, जिसे दशकों से उपेक्षित किया गया है वह है मासिक धर्म। हालांकि, यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया है लेकिन इससे जुड़े सांस्कृतिक मानदंडों, मिथकों और भय ने इसे शर्मिंदगी, दर्द और निषेध का विषय बना दिया है। लड़कियों को मासिक धर्म से गुजरते समय चुप और प्रतिबंधित रहने के लिए सिखाया जाता है। महिलाओं के जैविक गुणों के मुक्त संवाद और प्राकृतिक स्वीकृति के अभाव में, महिलाओं व लड़कियों ने स्वयं अपने शारीरिक आयामों को सीमाओं के रूप में लेना शुरू कर दिया है। जिस तरह से लड़कियां मासिक धर्म और समाज में संबंधित मुद्दों के बारे में सीखती हैं, उसका उनके अपने शरीर के लिए उनकी धारणा पर गहरा प्रभाव पड़ता है ।

मासिक धर्म योनि के माध्यम से रक्त और श्लैष्मिक ऊतक का मासिक निर्वहन है और सामान्यतः माहवारी के रूप में जाना जाता है। सामान्यतः प्राथमिक मासिक धर्म लड़कियों के बीच 11 से 15 साल की उम्र के बीच होता है और 45–50 साल की उम्र तक रहता है। यद्यपि मासिक धर्म महिलाओं व लड़कियों के लिए अद्वितीय घटना है और प्रजनन के लिए तैयार शरीर का संकेत है, लेकिन इससे जुड़े भय, प्रतिबंध और मिथकों ने इसे शरीर की प्राकृतिक प्रतिक्रिया के बजाय लड़कियों पर दवाब बनाने में योगदान दिया है। वेदों के अनुसार, भगवान इंद्र ने क्रोध में एक ब्राह्मण को मार डाला है और महिलाओं व लड़कियों ने मासिक धर्म प्रवाह के रूप में भगवान इंद्र के अपराध को अपने ऊपर ले लिया है।

हालांकि, यह जांचना महत्वपूर्ण है कि क्या बेहतर सामाजिक–आर्थिक स्थिति महिलाओं व लड़कियों के बीच अपनी पहचान के लिए गलत धारणाओं को अस्वीकार करने में सक्षम है। मासिक धर्म स्वच्छता और अन्य प्रथाओं के लिए विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति में महिलाओं व लड़कियों की धारणा वर्तमान अध्ययन का केंद्र बन गई है। व्यक्तिगत स्वच्छता प्रथाओं की खोज करने के अलावा, अध्ययन महिलाओं व लड़कियों के बीच मौजूद भय और उन्नत तकनीकी और वैज्ञानिक विकास के युग में अभी भी पालन किए जाने वाले प्रतिबंधों का पता लगाने की कोशिश करता है। इसके अतिरिक्त अध्ययन का स्थान विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाली महिलाओं व लड़कियों में मासिक धर्म से जुड़े विभिन्न मिथकों और भय की प्रासंगिकता को मापने की आवश्यकता है।

सैद्धांतिक रूपरेखा

सैद्धांतिक ढांचे में अनुसंधान अध्ययन के लिए प्रासंगिक विभिन्न सिद्धांत, अवधारणाएं और अन्य मौजूदा साहित्य शामिल हैं। यह शोधकर्ता को अध्ययन के तहत घटना से संबंधित स्थापित ज्ञान से जोड़ता है। यह अनुसंधान क्षेत्रों के लिए एक आधार प्रदान करने के लिए विभिन्न मान्यताओं को स्पष्ट करने में मदद करता है और उन धारणाओं को अनुसंधान अध्ययन को मान्य करने के लिए आगे विश्लेषण किया जा सकता है। समाज के सदस्यों के बीच आदतें, व्यवहार और अन्य दैनिक प्रथाएं सांस्कृतिक रूप से उत्पादित और पोषित हैं। विभिन्न समाजों में पुरुषों और महिलाओं से जुड़ी विभिन्न भूमिकाएं और धारणाएं सामाजिक रूप से निर्मित होती हैं और 'मर्दाना' और 'स्त्री' के रूप में नामित विशिष्ट व्यवहार के निर्माण पर पर्याप्त प्रभाव डालती हैं। पुरुषों और महिलाओं के बीच मौजूद विशिष्ट जैविक विशेषताएं स्वाभाविक हैं लेकिन संस्कृति की मदद से समाज ने उन्हें अद्वितीय भूमिकाओं, मान्यताओं और प्रथाओं के साथ जोड़ा है। पितृसत्तात्मक समाज में, पुरुषों की उच्च स्थिति को बनाए रखने के लिए अद्वितीय मान्यताओं और प्रथाओं में हेरफेर किया जाता है और महिलाएं व लड़कियों संस्कृति की इतनी आदी हैं कि उन्हें यह भी एहसास नहीं है कि प्रचलित धारणाएं पितृसत्तात्मक समाज में उनकी अधीन स्थिति को बनाए रखती हैं।

ओकली (1974) का मानना है कि पुरुषों और महिलाओं के बीच जैविक अंतर जो भी हो, एक समाज की संस्कृति पितृसत्ता और स्त्री व्यवहार के निर्माण में सबसे अधिक प्रभाव डालती है। ओकली ने आगे कहा, बचपन से ही समाजीकरण की प्रक्रिया में बच्चे की आत्म–अवधारणा में हेरफेर किया जाता है। लड़कियों को व्यवहार करने में नरम और सौम्य होना सिखाया जाता है जबकि लड़कों को अधिक आक्रामक होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

ओकले के दृष्टिकोण में, लिंग सामाजिक रूप से निर्मित है और पुरुषों और महिलाओं के व्यवहार में अंतर जीव विज्ञान के विरासत योग्य परिणाम होने के बजाय सीखा जाता है। पामेला एबॉट, क्लेयर वालेस और मेलिसा टायलर (2005) का तर्क है कि पितृसत्तात्मक समाज में, महिलाएं विषय वर्ग हैं और पुरुष शासक वर्ग हैं। उन्होंने आगे कहा, पितृसत्तात्मक समाज में पुरुष प्रभुत्व को सुरक्षित करने और बनाए रखने के लिए हिंसा और बलात्कार जैसे विभिन्न तरीकों को अपनाया जाता है। एबोट (2005),के अनुसार लैंगिक भूमिकाओं में समाजीकरण ने पुरुषों और महिलाओं से कठोर और अनम्य अपेक्षाओं का उत्पादन किया है और परिणामस्वरूप संस्कृति में असमानताएं और भेदभाव विकसित हुए हैं। अवसरों का असमान वितरण समाज की संरचना में निहित है और संस्कृति का पुरुषों के साथ–साथ महिलाओं के लिए भी हानिकारक प्रभाव पड़ता है। शेरी बी ऑर्टनर (1974) का दावा है कि यह जीव विज्ञान नहीं है जो महिलाओं को उत्पीड़ित दर्जा देता है, बल्कि जिस तरह से हर संस्कृति महिला जीव विज्ञान को परिभाषित और मूल्यांकन करती है। अपनी पुस्तक "म•नंस चवसपजपबे" (1970) में, केट मिलेट का तर्क है कि, "पितृसत्ता हमारी संस्कृति की सबसे व्यापक विचारधारा है और यह वर्ग स्तरीकरण की तुलना में अधिक प्रतिगामी है, निश्चित रूप से अधिक समान है। प्रभुत्व के ऐसे रिश्ते जीवन के सभी क्षेत्रों में मौजूद हो सकते हैं।

उपर्युक्त प्रवचन से, यह कहा जा सकता है कि लिंग एक सामाजिक रूप से निर्मित अवधारणा है और पितृसत्तात्मक समाज में, पुरुष प्रभुत्व को बनाए रखने के लिए लिंग विशेषताओं को इस तरह से हेरफेर किया जाता है। मान्यताओं, अवधारणाओं और प्रथाओं को पितृसत्ता का समर्थन करने के लिए गढ़ा गया है और महिलाएं व लड़कियों स्वयं अपने शारीरिक आयामों और सामाजिक स्थिति को कमजोर मानती हैं।

साहित्य समीक्षा

वर्तमान अध्ययन के उद्देश्य से, शोधकर्ता ने लड़कियों के मध्य मासिक धर्म स्वच्छता की स्थिति, मासिक धर्म के दौरान पारिवारिक सहयोग के बारे में विश्लेषण करने की कोशिश की है। संगीता कंसल, श्वेता सिंह और आलोक कुमार द्वारा (2011) में वाराणसी में स्कूली शिक्षा के संदर्भ में मासिक धर्म स्वच्छता प्रथाओं पर किए गए एक अन्य अध्ययन में। 650 किशोरों के अध्ययन ने निष्कर्ष निकाला है कि केवल आधे उत्तरदाता सेनेटरी पैड का उपयोग कर रहे थे, जबकि उनमें से बाकी कपड़ों का उपयोग कर रहे थे। यहां तक कि उनमें से कुछ कपड़े का पुनः उपयोग कर रहे थे। इसके अलावा, उनमें से अधिकांश बाजार से सेनेटरी नेपकिन खरीदने में खुद को घबराए हुए पाते हैं। स्कूली शिक्षा देने वाली लड़कियों के बीच मासिक धर्म स्वच्छता प्रथाओं की कमी खतरनाक है क्योंकि उन्हें अधिक सूचित होने की उम्मीद है। अध्ययन में

सुझाव दिया गया है कि शिक्षक व्यक्तिगत स्वच्छता के लिए लड़कियों को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं ।

कोइराला प्रीति और जीसी सोनी (2013) ने मासिक धर्म प्रथाओं के बारे में नेपाली किशोरियों के लिए जानकारी के स्रोत की पहचान पर एक अध्ययन किया है। महिलाओं के बीच मौजूद विभिन्न सांस्कृतिक प्रथाओं का भी विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन में, स्वयंसेवक उत्तरदाताओं को मासिक धर्म के बारे में उनकी धारणा पर एक निबंध लिखने के लिए कहा गया है। अध्ययन में उल्लेख किया गया है कि मासिक धर्म होने के दौरान, महिलाओं व लड़कियों को 'छौपदी गोठ' नामक एक अलग झोपड़ी में रहना पड़ता है क्योंकि मासिक धर्म घर में दुर्भाग्य लाता है।

शिवलेरला पी उपासे, टेस्फलीडेट टेकेलाब और जलाने मेकोमेन (2014) ने पश्चिमी इथियोपिया में हाई स्कूल की लड़कियों के बीच मासिक धर्म स्वच्छता के ज्ञान और अभ्यास का अध्ययन किया है। अध्ययन ने निष्कर्ष निकाला कि मां की शैक्षिक स्थिति और परिवारों या रिश्तेदारों से स्थायी पॉकेट मनी की कमाई का मासिक धर्म स्वच्छता के अच्छे अभ्यास के साथ महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध है। इसके अलावा, अध्ययन में यह पता चला है कि हालांकि आधे उत्तरदाताओं को मासिक धर्म और मासिक धर्म स्वच्छता का अच्छा ज्ञान था, लेकिन मासिक धर्म स्वच्छता का अभ्यास कम (39.9 प्रतिशत) पाया गया ।

बोटेलो और रोजा कासाडो (2015), ने सेविले, स्पेन में मासिक धर्म से संबंधित भय और मानसिक तनावों का विश्लेषण करने की कोशिश की है। अध्ययन के परिणामों ने स्वास्थ्य के लिए हानिकारक प्रभावों के साथ मासिक धर्म के दौरान पानी के उपयोग से संबंधित आशंकाओं पर प्रकाश डाला। अध्ययन में आगे उल्लेख किया गया है कि, कई अभियानों के बावजूद, ग्रामीण और शहरी महिलाओं के बीच अभी भी कई प्राचीन गलत धारणाएं मौजूद हैं। अध्ययन में प्राप्त आशंकाएं मासिक धर्म वाली महिलाओं को स्ट्रोक, पक्षाघात और डिमेंशिया जैसी बीमारियों के जोखिम के कारण पानी के साथ थोड़ा सा भी संपर्क करने से मना करती हैं । महत्वपूर्ण अवलोकन यह है कि मासिक धर्म के दौरान पानी के उपयोग पर प्रतिबंध अध्ययन क्षेत्र में एक संसाधन के रूप में पानी की कमी से संबंधित हो सकता है।

2008 में ठाकुर हर्षद, एनेट एरोनसन, सीमा बंसोडे, सेसिलिया स्टाल्सबी लुनाबोर्ग, सुचित्रा दलवी और एलिजाबेथ फैक्सलिड द्वारा मुंबई, भारत में निम्न सामाजिक–आर्थिक समुदाय के बीच एक महत्वपूर्ण अध्ययन किया गया है ।अध्ययन में कहा गया है कि महिलाओं व लड़कियों को अपने आवधिक चक्र के दौरान इतने सारे अनावश्यक धार्मिक प्रतिबंधों का पालन करना पड़ता है । अध्ययन में आगे दर्शाया गया है कि लड़कियों को निपटाने से पहले अपने सेनेटरी नेपकिन को धोने के लिए कहा जाता है क्योंकि एक मिथक में कहा गया है कि, "एक सांप दाग वाले पैड का खून खाने के लिए आएगा और महिला को बांझपन या अभिशाप के खतरे में डाल देगा"। आवधिक मासिक धर्म चक्र वाली महिलाओं को अछूत माना जाता है । इसके अलावा, यह माना जाता है कि यदि वे किसी भी पौधे, सब्जियों या जैविक चीजों को छूते हैं, तो यह सड़ जाएगा क्योंकि उनके मासिक धर्म के कारण उन्हें जहर मिलता है । अध्ययन के निष्कर्षों से पता

चलता है कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने कहा कि मासिक धर्म को अभी भी नेपाली समाज में अछूत का मामला माना जाता है। उत्तरदाताओं ने आगे उल्लेख किया कि मासिक धर्म चक्र के दौरान खुद को खिलाने के लिए उनके पास अलग बर्तन होते थे। हालांकि, किशोरियों को अब मासिक धर्म चक्र के स्वच्छता पहलू के बारे में पता है, लेकिन फिर भी उन्हें मासिक धर्म के दौरान अलगाव और परेशान किया जाता है ।

कामाख्या कुमार, अरनिस्ना दत्ता और अरूप बंद्यपाध्याय (2015) ने बिहार के ग्रामीण क्षेत्र में मासिक धर्म के दौरान लड़कियों के ज्ञान, समस्याओं और प्रथाओं पर एक अध्ययन किया है। अध्ययन ने निष्कर्ष निकाला है कि मासिक धर्म के बारे में लड़कियों के ज्ञान में काफी कमी है। इसके अलावा, संबंधित मुद्दों पर खुले तौर पर चर्चा करने में माता–पिता के नकारात्मक रवैये ने सही प्रकार की जानकारी तक पहुंच को अवरुद्ध कर दिया है । सांगवान गरिमा और बीएम वशिष्ठ (2017) ने हरियाणा के रोहतक में ग्रामीण स्कूल जाने वाली किशोरियों के बीच मासिक धर्म के बारे में सांस्कृतिक प्रथाओं, प्रतिबंधों और तैयारियों का अध्ययन किया है। परिणामों का दावा है कि 95 प्रतिशत लड़कियों को विभिन्न प्रतिबंधों का पालन करना पड़ता है, जबकि 38 प्रतिशत लड़कियों मासिक धर्म के बाद मासिक धर्म के लिए तैयार नहीं थीं। किशोरियों ने कहा कि अध्ययन में उनके आहार, रसोई में काम करने, मेहमानों की सेवा करने, स्नान करने और मंदिर जाने पर प्रतिबंध है ।

शोध समस्या

उपर्युक्त तथ्यों के वर्णन से, यह स्पष्ट होता है कि मासिक धर्म वाली किशोरियों के बीच स्वच्छता विधि, पारिवारिक सहयोग को समझने पर बहुत शोध कार्य किया गया है। यद्यपि अधिकांश शोध चिकित्सा क्षेत्र में किए जाते हैं, इसलिए विकसित ज्ञान केवल मासिक धर्म प्रथाओं के मात्रात्मक पहलू तक ही सीमित लगता है। हालांकि, कुछ अध्ययनों ने विभिन्न प्रकार के प्रतिबंधों और आशंकाओं की जांच करने की कोशिश की है जो महिलाओं लडकियों पर उनके आवधिक चक्र के दौरान प्रत्यारोपित गए हैं। लेकिन प्रायः इस घटना को देखने के लिए ग्रामीण मामलों को लिया गया था। इसके अलावा, कॉलेज के विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति से संबंधित लडकियों के बीच मासिक धर्म से जुड़ी सांस्कृतिक प्रथाओं की जांच करने के लिए बहुत कम अध्ययन किए गए हैं। अतः इस समस्याओं को देखते हुए शोधकर्ती ने प्रस्तुत शोध का आयोजन किया है।

अध्ययन के उद्देश्य

- विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति में लड़कियों के बीच प्रचलित व्यक्तिगत स्वच्छता विधि को जानना ।
- मासिक धर्म के दौरान पारिवारिक सहयोग के बारे में जानना

शोध प्रश्न

- क्या मासिक धर्म के दौरान पारिवारिक सदस्य से सहयोग प्राप्त होता है ?
- क्या मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता का ध्यान रखा जाता है ?

शोध प्रविधि

वर्तमान अध्ययन 10 –19 वर्ष की कुरूक्षेत्र की 60 किशोरियों पर आधारित है। उत्तरदाताओं का एक गैर सम्भावना नमूना के अंतर्गत स्नो बॉल प्रतिचयन के माध्यम से चयन किया गया है तथा इस माध्यम से वर्तमान अध्ययन में, 60 किशोरियों से तथ्य एकत्र किया गया है। उत्तरदाताओं से साक्षात्कार अनुसूची एवम अवलोकन के माध्यम से तथ्य एकत्रित किया गया है। तथ्य का विश्लेष्ण वर्णनात्मक प्रारूप के माध्यम से किया गया। अर्थात अध्ययन का स्वरूप गुणात्मक है। इस अध्ययन में तथ्यों का विश्लेषण कथनात्माक उपागम के माध्यम से किया गया है।

शोध महत्व

प्रस्तुत शोध का विशेष महत्व है चुंकि इस शोध पत्र को छात्राओं के जीवन विषय विशेष के अंतर्गत पारिवारिक सहयोग, व्यक्तिगत स्वच्छता को शामिल किया गया है एवम यह एक समाजशास्त्रीय अध्ययन है। अतः इस सभी परिपेक्ष्य के हेतु यह शोध महत्वपूर्ण है।

आयु के आधार पर उत्तरदात्रियों का वर्गीकरण

सारणी संख्या 1

उत्तरदात्रियों की संख्या	आयु	प्रतिशत
45	11–13	75
15	14–17	25
कुल	60	100

उक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि, प्रस्तुत अध्ययनों के 60 लडकियां में 45 (75) लडकियां 11–13 वर्ष की है तथा 15 (25) प्रतिशत लडकियां 14–17 वर्ष के बीच की है।

सेनेटरी पैड्स के प्रयोग के आधार पर वर्गीकरण

सारणी संख्या 2

उत्तरदात्रियों की संख्या	हाँ /नही	प्रतिशत
37	हाँ	61ण66
23	नहीं	38ण33
कुल	60	100

उक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि 60 लडकियों में 37 लडकियां सेनेटरी पैड्स का प्रयोग करती है जबकि 23 किशोरियां कपडे का प्रयोग करती हैं। प्रस्तुत तथ्यों से दृष्टिपात होता है कि आज भी किशोरियां मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता का विशेष ध्यान नहीं रखती हैं।

मासिक धर्म के दौरान सेनेटरी पैड्स बदलने की आवृति के आधार पर उत्तरदात्रियों का वर्गीकरण

सारणी संख्या 3

उत्तरदात्रियों की संख्या	आवृति	प्रतिशत
43	2–3	71ण्66
17	4–5	28ण्33
कुल	60	100

प्राप्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि , 60 लडकियों में 43 लडकियां 2–3 बार सेनेटरी पैड बदलती है जबकि 17 लडकियां 4–5 बार सेनेटरी पैड बदलती थी। इससे यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश लडकियां मासिक धर्म स्वच्छता का ध्यान नहीं रखती हैं।

सेनेटरी पैड्स निपटान के तरीके के आधार पर उत्तरदात्रियों का वर्गीकरण

सारणी संख्या 4

उत्तरदात्रियोंकी संख्या	निपटान के तरीके	प्रतिशत
35	कूडेदानी	58ण्33
25	यत्र– तत्र	41ण्66
कुल	60	100

उक्त तथ्यों के वर्णन से स्पष्ट होता है कि 60 लडकियों में 35 लडकियां सेनेटरी पैड्स के निपटान हेतु कूडेदानी का प्रयोग करती हैं जबकि 25 किशोरियां यत्र तत्र फेंक देती हैं। इन तथ्यों से दृष्टिपात होता है कि अध्ययन क्षेत्र में स्वच्छता के संदर्भ में जागरूकता का स्तर संतोषजनक है।

मासिक धर्म के दौरान परिवारिक सहयोग के आधार पर उत्तरदात्रियों का वर्गीकरण

सारणी संख्या 5

उत्तरदात्रियों की संख्या	हाँ/ नही	प्रतिशत
38	नहीं	63ण्33
22	हाँ (माता)	36ण्66
कुल	60	100

वर्णित तथ्यों से स्पष्ट होता है कि मासिक धर्म में के दौरान पुरूष सदस्य से किसी प्रकार का सहयोग प्राप्त नही होता है।

निष्कर्ष

तथ्यों से स्पष्ट होता है कि , प्रस्तुत अध्ययनों के 60 लडकियां में 45 (75) लडकियां 11–13 वर्ष की है तथा 15 (25) प्रतिशत लडकियां 14–17 वर्ष के बीच की है। 60 लडकियों में 37 लडकियां सेनेटरी पैड्स का प्रयोग करती है जबकि 23 किशोरियां कपडे का प्रयोग करती हैं। प्रस्तुत तथ्यों से दृष्टिपात होता है कि आज भी किशोरियां मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता का विशेष ध्यान नहीं रखती है। प्राप्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि, 60 लडकियों में 43 लडकियां 2–3 बार सेनेटरी पैड बदलती है जबकि 17 लडकियां 4–5 बार सेनेटरी पैड बदलती थी। इससे यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश लडकियां मासिक धर्म स्वच्छता का ध्यान नहीं रखती हैं। उक्त तथ्यों के वर्णन से स्पष्ट होता है कि 60 लडकियों में 35 लडकियां सेनेटरी पैड्स के निपटान हेतु कूडेदानी का प्रयोग करती हैं जबकि 25 किशोरियां यत्र तत्र फेंक देती हैं। इन तथ्यों से दृष्टिपात होता है कि अध्ययन क्षेत्र में स्वच्छता के संदर्भ में जागरूकता का स्तर असंतोषजनक है। मासिक धर्म में के दौरान पुरूष सदस्य से किसी प्रकार का सहयोग प्राप्त नही होता है।

सन्दर्भ सूची

Abbot, P. Wallace, C. and Tyler M. (2005) An Introduction to Sociology: Feminist Perspective, 3rd edn, Routledge, Abingdon.

Botello, Alice and Rosa Casado (2015) Fears and concerns related to menstruation: A Qualitative study from the perspective of Gender retrieved from https://dx.dol.org/10.1590/0104-07072015000260014 on 9th February 2018 at 11:00 pm.

Dasgupta A, Sark ar M. (2008) Menstrual Hygiene Indian Journal of Community Medicine Vol.33(2) pp 77-80

Dovidio, J. F., Major, B., & Crocker, J. (2000)," *Stigma,"* Introduction and overview. In T. F. Heatherton, R. E. Kleeck, M. R. Hebel, & J. G. Hull (Eds.), The social psychology of stigma (pp. 1–28). New York: Guilford.

Goffman, E. (1963*)," Stigma: Notes on the management of spoiled identity*", New York: Simon & Schuster.

https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC2784630/

Kamakhya Kumar, Arunima Datta and Arup Bandyopadhyay (2015) "Knowledge, Problems and Practices of Adolescent Girls during Menstruating Indian Medial Gazette March 2015 (85-88).

Kansal Sangeeta, Sweta Singh and Alok Kumar (2011) "Menstrual Hygiene Practices in Context of schooling: A community study among rural adolescent girls in Varanasi. Original Article retrieved from http://www.ijcm.org.in on 16th Jan. 2018 9:30 am.

Koirala Priti and G.C. Soni (2013). Menstruation among Nepalese adolescent girls Bactelu's Thesis, JAMK University of Applied Sciences Finland.

Lerner Gerda (1986) The creation of patriarchy, Oxford University Press.

Millet K. (1970) Sexual Politics, Double day, Newyork.

Nair Sheela S. (2008) sharing simple facts. UNICEF New Delhi India.

Oakley, A. (1974) Housewife, Allen Lane London.

Ortner, S.B. (1974) 'Is female to make as nature is to culture? in M.Z. Rosaldo and L. Lamphere (eds) Woman, Culture and Society, Standford University Press, Stanford University Press, Standford.

Pollak, M. (2006), From the curse to the rag: "*Online girl's rewrite the menstruation narrative*", In Y. Jiwaji, C. Steenburgen, & C. Mitchell (Eds.), Girlhood: Redefining the limits (pp. 191–207). New York: Black Rose Books.

Sangwan Garima. and B.M. Vashisht (2017) "A Study of common cultural practices, restrictions and preparedness regarding menstruation among school going adolescent girls in a rural block of Haryana" Global Journal of Medicine and Public Health Vol. 6 Issue 2017 (1-5).

Shivaleela, P. Upashe, Testalidet Tekelab and Jalane (2014) Assessment of Knowledge and Practice of menstrual hygiene among high school girls in Western Ethiopia retrieved from https://www.ncbi.nlm.nip.gov/pmc/articles/PMC4606849 on 8th February 2018.

Thakur Harshad Annette Aronsson, Seema Bansode, Ceceillia Stalsby by hundborg, Suchitra Dalvie and Elisabeth Faxelid (2008) 'Knowledge, practices and Restrictions related to Menstruation among young women from low socio-economic Community in Mumbai,India. https://www.ncbi.nlm.nik.gov/PMC/articles/PMC4080761 retrieved on 2nd January 2018 4:30 pm.